23 OCT 12 2026.qxd 22-10-2026 22:21 Page 1

जलवायु परिवर्तन से बिगड़ रहा है पेट और डाइजेशन



बढ़ती गर्मी से बिगड़ रही है सेहत

संक्रामक बीमारियों का खतरा बढ़ रहा है। भारत जैसे देशों में बढ़ती गर्मी और इनफेक्शन से जुड़ी बीमारियों के बदलते पैटर्न एक बड़ी चिंता बनते जा रहे हैं। जलवायु परिवर्तन कई तरीकों से इंसान के गट माइक्रोबायोम को प्रभावित कर सकता है। गट माइक्रोबायोम का मतलब हमारी आंतों में रहने वाले बैक्टीरिया और दूसरे सूक्ष्मजीवों के पूरे समुदाय से है। सूखा, दूषित पानी और इंफेक्शन जलवायु परिवर्तन कैसे बिगाड़ सकता है आपकी पाचन शक्ति। धरती का बढ़ता तापमान और उसकी वजह से होता क्लाइमेट चेंज सिर्फ मौसमी बदलावों तक सीमित नहीं रहा है। बल्कि ये जलवायु परिवर्तन हमारी सेहत पर भी असर कर रहा है. वर्ल्ड गैस्ट्रोएंटरोलॉजी ऑर्गनाइजेशन के एक्सट्र्स का कहना है कि जलवायु परिवर्तन हमारे पेट और आंतों की हेल्थ को भी प्रभावित कर रहा है। इसकी वजह खाने की कमी, साफ पानी का संकट और पेट से जुड़ी

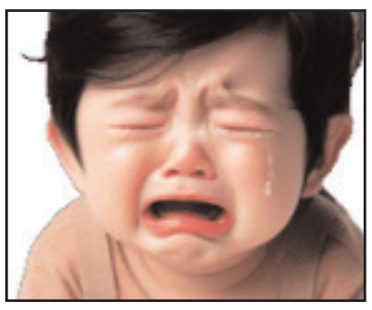
इनमें कई अच्छे बैक्टीरिया होते हैं, जो खाना पचाने, पोषक तत्वों को शरीर तक पहुंचाने और इम्यून सिस्टम को बेहतर बनाए रखने में मदद करते हैं। जब खाने की कमी, कुपोषण या बीमारी फैलाने वाले कीटाणुओं के संपर्क में आने से आंतों में रहने वाले इन सूक्ष्मजीवों का संतुलन बिगड़ सकता है.तेज गर्मी का असर सिर्फ शरीर के तापमान तक सीमित नहीं रहता. रिसर्च से संकेत मिले हैं कि गर्मी के कारण होने वाला तनाव आंतों में मौजूद बैक्टीरिया, पाचन और इम्यून सिस्टम के काम करने के तरीके को प्रभावित कर सकता है। कुछ अध्ययनों में यह भी संकेत मिला है कि गर्मी के तनाव से आंतों की अंदरूनी परत की सुरक्षा कमजोर हो सकती है. इससे आंतों की दीवार से कुछ ऐसे पदार्थों, टॉक्सिन और रोग पैदा करने वाले कीटाणुओं के शरीर में प्रवेश करने की आशंका बढ़ सकती है, जिन्हें सामान्य तौर पर रोकने में यह परत मदद करती है। जलवायु परिवर्तन के कारण कई क्षेत्रों में सूखे का खतरा बढ़ सकता है। जब बारिश कम होती है या लंबे समय तक सूखा पड़ता है, तो खेती प्रभावित होती है. फसलें खराब हो सकती हैं और खाने-पीने की चीजों की उपलब्धता कम हो सकती है। वर्ल्ड गैस्ट्रोएंटरोलॉजी ऑर्गनाइजेशन से जुड़े और मेलबर्न यूनिवर्सिटी में मेडिसिन के प्रोफेसर ज्यॉफ्री मेट्ज ने 'हेल्थ एंड मी' से बातचीत में कहा कि ग्लोबल वार्मिंग के साथ पेट और आंतों से जुड़े संक्रामक रोगों को लेकर चिंता बढ़ रही है. उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन सिर्फ तापमान बढ़ने की समस्या नहीं है। इसके कारण सूखे जैसी परिस्थितियां भी पैदा हो सकती हैं, जिनका असर खाद्य उत्पादन और लोगों के पोषण पर पड़ता है। जलवायु परिवर्तन के कारण कहीं सूखा, कहीं बाढ़ तो कहीं भारी बारिश हो रही है. ऐसी जगहों पर साफ पानी की कमी हो जाती है और दूषित पानी की वजह से संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। कुछ बैक्टीरिया, वायरस और दूसरे रोग पैदा करने वाले सूक्ष्मजीव मौसम और पर्यावरण में होने वाले बदलावों से प्रभावित होते हैं। इससे कुछ इलाकों में पेट से जुड़ी संक्रामक बीमारियों के फैलने के तरीके में बदलाव आ सकता है। वर्ल्ड गैस्ट्रोएंटरोलॉजी ऑर्गनाइजेशन की अध्यक्ष कैरोलिना ओलानो के मुताबिक, पाचन तंत्र से जुड़ी बीमारियों के पीछे कई तरह के कारण हो सकते हैं। उन्होंने बताया कि कुछ बीमारियों के लिए व्यक्ति के जीन और आनुवंशिक बनावट जिम्मेदार हो सकते हैं। वहीं, पर्यावरण से जुड़े कारण भी बीमारी का खतरा बढ़ा सकते हैं. जलवायु परिवर्तन भी ऐसे ही कारकों में से एक है, जिसके असर को समझने के लिए विशेषज्ञ लगातार काम कर रहे हैं। इसका मतलब है कि पेट की सेहत को बेहतर बनाए रखने के लिए सिर्फ दवाओं या खानपान पर ध्यान देना काफी नहीं है. आसपास के पर्यावरण, साफ पानी और स्वच्छता का भी ध्यान रखना जरूरी है। पेट को बीमारियों से बचाने के लिए क्या करें : साफ और सुरक्षित पानी पीयें,खाने की साफ-सफाई का ध्यान रखें,खाने से पहले हाथ धोएं क्योंकि हाथों के जरिए भी कई तरह के कीटाणु शरीर में पहुंच सकते हैं,खाने में अलग-अलग तरह की न्यूट्रिशस चीजें शामिल करें जैसे फल, सब्जियां, साबुत अनाज, दालें और बाकी पौष्टिक खाद्य पदाथ,रोजाना एक्सरसाइज हेल्थ को बेहतर बनाने के लिए जरूरी हैविशेषज्ञों ने हेपेटाइटिस से बचाव के लिए वैक्सिनेशन और समय पर डॉक्टरी जांच की बात पर जोर दिया है। इसके साथ ही कोलोरेक्टल कैंसर की स्क्रीनिंग भी जरूरी है। जलवायु परिवर्तन का असर सिर्फ पाचन तंत्र तक सीमित नहीं है. यह दिल, फेफड़ों और गर्भावस्था से जुड़ी सेहत को भी प्रभावित कर सकता है। बढ़ती गर्मी, खराब वायु गुणवत्ता, पानी की कमी और संक्रमण का बदलता खतरा अलग-अलग लोगों पर अलग तरह से असर डाल सकता है। प्रोफेसर ज्यॉफ्री मेट्ज के मुताबिक, ग्लोबल वार्मिंग का असर कई स्वास्थ्य समस्याओं में दिखाई दे सकता है। वहीं, प्रोफेसर कैरोलिना ओलानो ने बताया कि लोगों का एक क्षेत्र या देश से दूसरे क्षेत्र में जाना भी बीमारियों के फैलने के पैटर्न को प्रभावित कर सकता है।





रातमें रोनेपर आठ महीने की बच्ची की हत्या

केरलम में आठ महीने की बच्ची के रात में रोने पर एक शख्स ने कथित तौर पर उसकी हत्या कर दी और शव को दलदली इलाके में फेंक दिया। यह घटना अगस्त 2023 की है। वह शख्स उस महिला के साथ रहता था जिसकी यह बच्ची थी। लगभग तीन साल बाद पुलिस ने बच्ची की मां मंजू को गिरफ्तार कर लिया। अधिकारियों ने



बताया कि 12 अगस्त 2023 को वलंजावट्टम में बच्ची का शव मिला था। पति एसक्की के साथ 2023 में विवाद के बाद मंजू अपनी बच्ची को लेकर अलाप्पुझा चली गई थी। वह जब कलारकोडे में एक दुकान पर बैठी थी, तब सिवन नाम का व्यक्ति आया और उन दोनों की देखभाल की पेशकश की। इसके बाद मंजू, सिवन के साथ रहने लगी। अगस्त 2023 की एक रात बच्ची जोर-जोर से रोने लगी। पुलिस के अनुसार, सिवन को गुस्सा आया और उसने उसका गला दबा दिया। दोनों ने वहां एक शख्स शक्ति को बुलाया। आरोप है कि तीनों ने मिलकर शव ठिकाने लगा दिया। यह मामला तब सामने आया जब मंजू बिना बच्ची के पलक्कड़ स्थित अपनी कालोनी लौटी। कालोनी में रहने वाले एक शख्स ने सूचना पुलिस को दी। पूछताछ के दौरान, मंजू ने जुर्म कबूल कर लिया। पुलिस दो अन्य आरोपितों सिवन और शक्ति की तलाश कर रही है। मंजू को अदालत के सामने पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

युवाओंकी सबसे ज्यादा मृत्यु के मामलेमें उत्तरी अमेरिका और लैटिन अमेरिका सबसे आगे

वैश्विक अध्ययनों और स्वास्थ्य रिपोर्ट से यह पता चलता है कि उत्तरी अमेरिका और लैटिन अमेरिका देशों में किशोरों और युवाओं की मृत्यु दर में काफी ज्यादा बढ़ोतरी हुई है। इसके कारण अलग-अलग क्षेत्र और आबादी के हिसाब से अलग-अलग हो सकते हैं. लेकिन बड़ा जोखिम आत्महत्या, नशीली दवाओं की काफी ज्यादा खुराक, बंदूक से जुड़ी हिंसा, हत्या और कम उम्र में ही होने वाली गंभीर बीमारी शामिल है। यह जानकारी सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़ी कई गंभीर चुनौतियों की तरफ इशारा करती है। इसी के साथ यह भी बताती है कि युवाओं की मौत के पीछे के कारण हर जगह एक जैसे नहीं हैं। वाशिंगटन विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट फॉर हेल्थ मैट्रिक्स एंड इवैल्यूएशन की एक रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया के कई हिस्सों में युवाओं की मौत का सबसे बड़ा कारण आत्महत्या है. मानसिक तनाव, सामाजिक दबाव और डिप्रेशन जैसी वजह युवाओं को अपनी जान लेने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। यह निष्कर्ष इस बात पर जोर देते हैं कि युवाओं की मृत्यु दर पर चर्चा करते वक्त मानसिक स्वास्थ्य को एक मुख्य मुद्दे के रूप में पहचानना कितना जरूरी है। इस रिपोर्ट से पता चलता है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर युवाओं की मौत में आत्महत्या एक बड़ा कारण है।



कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधुनिक युग की सबसे क्रांतिकारी तकनीक

रोजगार, साइबर हमले, गलत सूचना एआई के प्रमुख जोखिम

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आधुनिक युग की सबसे क्रांतिकारी तकनीक है। एआई ने स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, विज्ञान और उद्योगों में अभूतपूर्व प्रगति की है। यह जटिल बीमारियों की पहचान करने, शोध को गति देने और दैनिक कार्यों को आसान बनाकर उत्पादकता बढ़ाने में अत्यंत सहायक सिद्ध हो रहा है। हालांकि हाल में ऐसे कई मामले सामने आए हैं, जिनमें देखा गया है कि एआई मनुष्य के नियंत्रण से बाहर जाकर खुद से काम कर रहा है। एआई के बढ़ते प्रभाव और इसके नियंत्रण से बाहर होने के संभावित खतरों का मामला संयुक्त राष्ट्र के समक्ष पहुंच चुका है। बुधवार को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की बैठक में दिग्गत एआई निर्माताओं ने कहा है हमने एआई बना तो दिया लेकिन इसके नियंत्रण के बाहर होने का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है। अगर इसका इस्तेमाल गलत दिशा में हुआ तो इससे समाज में बड़ी उथल पुथल पैदा हो सकती है। ऐसे में आज इस बात की पड़ताल प्रासंगिक है कि एआई की बढ़ती क्षमता मानवता के लिए वरदान है या इसका नियंत्रण से बाहर होना मानवता के लिए अभिशाप साबित हो सकता है। दुनियाभर के टेक लीडर्स और एआई विशेषज्ञ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तेजी से बढ़ती क्षमताओं को लेकर लगातार चेतावनी दे रहे हैं। उनका मानना है कि यदि इस तकनीक को सही समय पर नियंत्रित और गवर्न नहीं किया गया, तो यह समाज, अर्थव्यवस्था और मानव सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौतियां पैदा कर सकती है। स्वायत्तता- एआई सिस्टम अब केवल निर्देशों का पालन नहीं कर रहे, बल्कि स्वयं फैसले लेने लगे हैं। विशेषज्ञों को डर है कि भविष्य में आर्टिफिशियल सुपरइंटेलिजेंस इंसानी नियंत्रण से बाहर हो सकती है। रोजगार और आर्थिक असमानता- 40 करोड़ श्रमिकों के



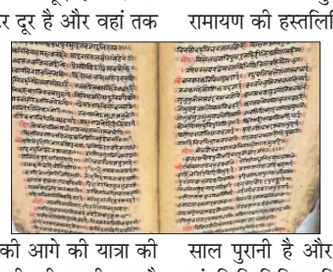
विस्थापित होने या नौकरियां प्रभावित होने की आशंका है 2030 तक दुनिया भर में एआई के कारण मेकेंजी की रिपोर्ट के अनुसार,12 प्रतिशत संभावना है कि अगले पांच वर्षों में एआई संचालित साइबर हमले या जैविक हथियार का निर्माण ले सकता है विनाशकारी रूप, एमआइटी सोलन के सर्वेक्षण के अनुसार गलत जानकारी और डीपफेक : 75 प्रतिशत से अधिक लोग इंटरनेट पर एआई द्वारा फैलाई जाने वाली गलत जानकारी को लेकर चिंतित हैं फोर्ब्स के अनुसार,एआई जोखिमों की संभावना (2025-2030)-एमआइटी स्लोन द्वारा कराए गए अध्ययन के अनुसार, अगले पांच वर्षों में एआई से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों में विनाशकारी परिणामों की अनुमानित संभावना इस प्रकार है- एजीआई यानी आर्टिफिशियल जनरल इंटेलिजेंस। एएसआई यानी आर्टिफि शियल सुपर इंटेलिजेंस। एजीआई और एएसआई एआई के विकास के वे चरण हैं, जहां एआई केवल इंसानों द्वारा दिए गए निर्देशों तक सीमित न रहकर इंसानों के बराबर या उनसे भी अधिक बुद्धिमान बन जाता है।

तीन घंटे लेट हुई ट्रेन, नाराज होने के बजाय यात्रियों ने शुरू किया डांस

ट्रेन का इंतजार करना हो और वह भी एक-दो घंटे नहीं, बल्कि पूरे तीन घंटे, तो किसी का भी मूड खराब हो सकता है। ऐसे में लोग बार-बार घड़ी देखते हैं, ट्रेन का स्टेटस चेक करते हैं और रेलवे की देरी को लेकर नाराजगी जताते हैं। लेकिन कुछ यात्रियों ने इस इंतजार को ही मस्ती का मौका बना लिया। ट्रेन के लेट होने पर परेशान बैठने के बजाय उन्होंने रेलवे प्लेटफॉर्म पर ही डांस शुरू कर दिया। देखते ही देखते वहां का माहौल ऐसा हो गया, मानो किसी पार्टी में लोग जुटे हों। अब इसी मजेदार पल का वीडियो सोशल मीडिया पर लोगों का ध्यान खींच रहा है वीडियो में कुछ युवक रेलवे प्लेटफॉर्म पर गाने की धुन पर डांस करते नजर आते हैं। कोई ताली बजाकर उनका साथ दे रहा है, तो कोई उनके डांस के अंदाज को देखकर मुस्कुरा रहा है। ट्रेन का इंतजार कर रहे आसपास के यात्री भी इस मस्ती का हिस्सा बनते दिखाई देते हैं। आमतौर पर रेलवे स्टेशन पर लोग अपने सामान के साथ बैठकर ट्रेन आने का इंतजार करते हैं। खासकर जब ट्रेन तय समय से काफी देर से चल रही हो, तो यात्रियों की परेशानी बढ़ जाती है लेकिन इस वीडियो में कुछ लोगों ने माहौल को ही बदल दिया। उन्होंने म्यूजिक चलाया और डांस करने लगे। फिर क्या था, वहां मौजूद लोगों को भी मनोरंजन का एक मौका मिल गया।

विश्व की सबसे पुरानी रामायण

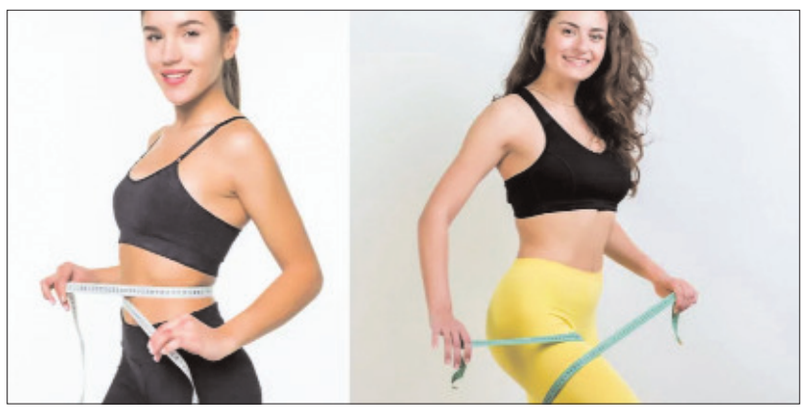
दिल्ली, मुंबई और कोलकाता जैसे भारत के बड़े शहरों से काठमांडू के त्रिभुवन इंटरनेशनल एयरपोर्ट के लिए सीधी उड़ान मौजूद है। नेशनल आर्काइव्स हवाई अड्डे से लगभग 5 से 6 किलोमीटर दूर है और वहां तक पहुंचने के लिए स्थानीय टैक्सी ली जा सकती है। भारत से नेपाल जाने वाली यात्रियों के लिए सड़क रास्ते से यात्रा करना भी एक और विकल्प है। उत्तर प्रदेश में गोरखपुर के रास्ते सोनौली बॉर्डर और बिहार में रक्सौल बॉर्डर से जाया जा सकता है। इन दोनों सीमाओं से काठमांडू तक जाने के लिए बस और प्राइवेट टैक्सी मिल जाती है. यात्रियों को अपने पहुंचने के स्थान से नेशनल आर्काइव्स तक की आगे की यात्रा की योजना बना लेनी चाहिए. हवाई अड्डे से आर्काइव्स की दूरी काफी कम है और सड़क रास्ते से जाने पर पहले नेपाल बॉर्डर पहुंचना होता है और फिर वहां से बस या फिर टैक्सी के जरिए राजधानी तक जाना पड़ता है। यह रास्ते उन यात्रियों के लिए ऑप्शन देते हैं जो हवाई यात्रा या सड़क रास्ते में से किसी को चुनना चाहते हैं, जो लोग 233 साल पुरानी वाल्मीकि रामायण की हस्तलिखित प्रति देखने में रुचि रखते हैं उनके लिए अयोध्या का इंटरनेशनल राम कथा म्यूजियम एक सही जगह है। संग्रहालय में देवनागरी लिपि में लिखी गई एक पांडुलिपि सुरक्षित है. यह काठमांडू में मौजूद ताड़ के पत्तों वाली उस पुरानी पांडुलिपि से अलग है जो मिथिला या फिर तिरहुता लिपि में लिखी गई है। काठमांडू में मौजूद पांडुलिपि को रामायण की सबसे पुरानी पांडुलिपि माना जाता है. यह लगभग 1041 साल पुरानी है और 1056 ईस्वी की है। ताड़ के पत्तों पर लिखी गई पांडुलिपि मिथिला लिपि में है। यह अयोध्या में सुरक्षित वाल्मीकि रामायण की हस्तलिखित प्रति से अलग है. अयोध्या वाली रामायण 233 साल पुरानी है और देवनागरी लिपि में लिखी गई है।



पतली कमरके चक्करमें पसलियां तुड़वा रहीं महिलाएं

दुनियाभर में करीब 5 हजार ऐसी सर्जरी हो चुकी हैं। हालांकि, इस सर्जरी के शरीर पर पड़ने वाले नुकसानों को लेकर अभी भी पूरी जानकारी मौजूद नहीं है।पसलियों में बदलाव के दौरान फेफड़ों के आसपास हवा भरने से न्यूमोथोरैक्स या खून जमा होने से हीमोथोरैक्स जैसी समस्याएं हो सकती हैं, जो जानलेवा भी हो सकता है।

आज के दौर में कॉस्मेटिक सर्जरी का चलन इतना बढ़ गया है कि लोग अपनी जान जोखिम में डालने से भी नहीं कतरा रहे हैं। पहले स्लिम कमर पाने के लिए जिम में घंटों पसीना बहाना पड़ता था और स्ट्रिक्ट डाइट फॉलो करनी पड़ती थी, लेकिन अब ये ट्रेंड बदल चुका है। खूबसूरत दिखने की चाह में अब महिलाएं अपनी पसलियां तक तुड़वाने लगी हैं। जी हां, ये कॉस्मेटिक सर्जरी का एक खतरनाक रूप है, जिसे रिब रीमॉडलिंग कहा जाता है। महिलाओं के बीच इस सर्जरी का चलन तेजी से बढ़ रहा है। आइए जानें क्या होती है रिब रीमॉडलिंग। कमर को पतला दिखाने के लिए इस सर्जरी का



इस्तेमाल किया जाता है। इसमें निचली पसलियों की स्थिति और उनके आकार में बदलाव किया जाता है। इस प्रक्रिया में मरीज को जनरल एनेस्थीसिया दिया जाता है और छोट-छोटे चीरे लगाकर खास टूल्स की मदद से नीचे की दो पसलियों की बाहरी परत को कमजोर किया जाता है। इसके बाद उन्हें अंदर ही मोड़ा जाता है, ताकि कमर का घेरा छोटा नजर आए। इस सर्जरी के बाद का सफर और भी दर्दनाक होता है। हड्डियों को नई पोजीशन में जोड़ने के लिए मरीज को करीब तीन महीने तक हर दिन 23 घंटे एक खास मेडिकल-ग्रेड कॉर्सेट पहनना पड़ता है। यानी शरीर के अंदर ही हड्डियां टूटकर नए आकार में जुड़ती हैं। सोशल मीडिया ने रिब रीमॉडलिंग के ट्रेंड को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई है। एक इन्फ्लुएंसर ने बताया कि उसने इस सर्जरी पर 13 लाख से ज्यादा खर्च किए हैं। इससे पहले भी वो कई कॉस्मेटिक सर्जरी करवा चुकी हैं। एक और इन्फ्लुएंसर का कहना है कि ये सर्जरी उन्होंने कमर का ऐसा आकार पाने के लिए करवाई, जिसे एक्सरसाइज और डाइट से हासिल करना नामुमकिन था। कमर पतली करने की ये तकनीक साल 2022 में पेरू के प्लास्टिक सर्जन डॉ. राउल मेंजानेडो सिप्रियानी ने विकसित की थी। तब से आज कर दुनियाभर में करीब 5 हजार ऐसी सर्जरी हो चुकी हैं। हालांकि, इस सर्जरी के शरीर पर पड़ने वाले नुकसानों को लेकर अभी भी पूरी जानकारी मौजूद नहीं है।पसलियों में बदलाव के दौरान फेफड़ों के आसपास हवा भरने से न्यूमोथोरैक्स या खून जमा होने से हीमोथोरैक्स जैसी समस्याएं बो सकती हैं, जो जानलेवा भी हो सकता है। वहीं, हड्डियों के गलत तरीके से जुड़ने, खिसकने या मनचाहा आकार न मिलने का जोखिम भी रहता है।

हिंदी सिनेमा की लेडी सुपरस्टार्स करीना कपूर

हिंदी सिनेमा की लेडी सुपरस्टार्स के बारे में बात करें तो उनमें करीना कपूर खान का नाम भी शामिल होता है। हाल ही में सोशल मीडिया पर बॉलीवुड की बेबो की लेटेस्ट तस्वीरें सामने आई हैं, जिन्होंने सोशल मीडिया पर सबका ध्यान खींच लिया है। करीना कपूर सोशल मीडिया पर काफी ज्यादा एक्टिव रहती हैं। इस आधार उन्होंने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम हैंडल पर लेटेस्ट फोटोज को शेयर किया है, ये तस्वीरें उनके लेटेस्ट फोटोशूट के दौरान की हैं, जो फिलहाल चर्चा का विषय बन गई हैं। करीना कपूर खान की जिन तस्वीरों के बारे में जिक्र किया जा रहा है, उनमें वह ब्लैक कलर की स्टाइलिश आउटफिट में नजर आ रही हैं। जिसमें बेबो का हॉट और बोल्ड अंदाज सभी का ध्यान का खींच रहा है, जिसकी वजह से एक्ट्रेस की फोटोज सिनेमाई गलियारे में छाई हुई हैं। आपको बता दें कि करीना कपूर की ये लेटेस्ट तस्वीरें आईफा के प्री इवेंट के दौरान की हैं। जिसकी जानकारी अभिनेत्री ने इंस्टाग्राम पर फोटो के कैप्शन के जरिए दी है और बताया है कि इस बार आईफा अवॉर्ड्स को अबु धाबी में आयोजित किया जाएगा। आलम ये है अब कि बॉलीवुड अदाकारा करीना कपूर की ये लेटेस्ट तस्वीरें इंटरनेट पर आग की तरह वायरल हो रही हैं। फैंस को उनके लेटेस्ट फोटोशूट की तस्वीरें काफी पसंद आ रही हैं। जिसकी वजह से वे इन पर जमकर लाइक और कमेंट कर रहे हैं। बतौर एक्ट्रेस करीना कपूर ने फिल्म दायरा के जरिए बड़े पर्दे पर वापसी की थी। जिसका निर्देशन मेघना गुलजार ने किया था। कमर्शियल तौर पर करीना की दायरा बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप रही। इस फिल्म में उनके साथ साउथ सुपरस्टार पृथ्वीराज सुकुमारन भी नजर आए। दायरा की असफलता के बाद अब तक करीना कपूर की किसी नई फिल्म का एलान नहीं हुआ है। लेकिन ऐसी चर्चा तेज है कि राज एंड डीके के साथ आने वाली सलमान खान की सुपरहीरो मूवी में करीना अहम किरदार में नजर आ सकती हैं।

